विद्या भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठ: द्वितीय: पाठनाम स्वर्णकाक:

ता: 26-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- तदा सा कन्या चाश्चर्यचकिता सञ्जाता यदा स्वर्णकाकेन स्वर्णस्थाल्यां भोजनं पर्यवेषितम् ।नैतादृक स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती । काको ब्रूते -बालिके ! अहमिच्छामि यत्त्वं सर्वदा चात्रैव तिष्ठ परं तव माता वर्तते ।चैकाकिनी । त्वं शीघ्रमेव स्वगृहं गच्छ ।
- अर्थ

  तब वह कन्या और भी आश्चर्यचकित हो गई ,जब सोने के कौवे ने सोने की थाली में(उसे) भोजन परोसा ।आज तक उस लड़की ने ऐसा स्वादिष्ट भोजन नहीं खाया था। कौवा बोला- हे बालिका(लड़की)! मैं चाहता हूं कि तुम हमेशा यहीं रहो, परंतु तुम्हारी माँ अकेली है। तुम जल्दी ही अपने घर को जाओ।